Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कथाकार शिवानी के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याएँ वर्तमान परिवेश में प्रासंगिकता

रेखा शर्मा * डॉ. संध्या बिसेन**

* शोधार्थी, स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंस, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, बालाघाट (म.प्र.) भारत
** विभागाध्यक्ष (हिन्दी) स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंस, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, बालाघाट (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक है। साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध है। एक साहित्यकार समाज मे उपस्थित वर्तमान, देशकाल परिस्थतियों को दृष्टिगत रखते हुए साहित्य का निर्माण करता है। साहित्यकार समाज में व्याप्त समसामयिक परिस्थतियों को केन्द्र में रखकर ही साहित्य का निर्माण करता है। भारतीय संस्कृति एवं समाज की धरोहरो को सहेजने का कार्य करता है।

व्यक्ति समाज का ही अंग है। वह समाज मे रहकर विभिन्न परिस्थतियो एवं अनुभूतियो को ग्रहण करता है। तथा वह अनुभूतियो को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। एवं समाज मे संप्रेषित करता है मुंशी प्रेमचंद के शब्दो में –

'मैं उपन्यास को मानव का चित्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।'

मनुष्य जीवन के यथार्थ को खोल देना, जीवन की वास्तविकता को प्रगट करना साहित्य का मूल भाव है। एवं संभवत: समस्या का समाधान भौतिक एवं मानसिक स्तर पर प्रयास करना ही साहित्य का उद्देश्य होता है। स्वातंत्रयोत्तर युग में औद्योगिकीकरण यांत्रिकीकरण राजनैतिक एवं सामाजिक उथल पुथल और अस्तित्ववादी भौतिकोन्मुख चिंतन के कारण उत्पन्न स्थिति के फलस्वरूप नारी जागरण एवं स्त्रीशिक्षा का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ जिसके फलस्वरूप साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में समृद्धि प्रदान करने वाली महिला साहित्यकारो की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ जिसने समाज में व्याप्त सभी दुख दर्दो अर्न्तद्धन्दो, परिवेश मे प्रचलित कुप्रथाओ, कुरीतियो मनोवैज्ञानिक आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याओ पर अपनी लेखनी की पैनी धार से उकेरा है। एवं अपने उद्धारो से पाठको को सोचने पर मजबूर कर दिया है।

हिन्दी साहित्य में अपने सशक्त हस्ताक्षर जिन्होंने सामाज में व्याप्त समस्याओ पर अपनी लेखनी चलाई है, उनमे से प्रमुख हस्ताक्षर है–

1. **अमृता प्रीतम**
2. **शिवानी जी**
3. **कृष्णा सोबती**
4. **उषाप्रियंवदा**
5. **मन्नू भंडारी**

मेरे शोध का विषय मेरी प्रिय लेखिका शिवानी जी द्धारा समाज में व्याप्त सामाजिक परिवेश में घुली हुई समस्याये जो कि हमारे जीवन के कुछ इस तरह घुलमिल गई है कि वे नजर आकर भी जीवन का एक अंग की तरह सदा साथ–साथ चलती हुई नजर आती है। लेखिका द्धारा समसामयिक परिवेश में व्याप्त सामाजिक समस्याऐ जो वर्तमान परिवेश में आज प्रासंगिक है। एक विश्लेषणात्मक अध्ययन निम्नानुसार है–

1. सामाजिक समस्या:–

1.1. दहेज प्रथा
1.2. बालविवाह
1.3. बहुविवाह
1.4. अनमेल विवाह
1.5. प्रेम विवाह (समाज की अस्वीकार्यता)
1.6. अंतर्जातिय विवाह
1.7. विवाह विच्छेद
1.8. कुष्ठरोगियों का सामाजिक बहिष्कार
1.9. आत्म हत्या की समस्या
1.10. संयुक्त परिवार का विघटन

2. प्रेम समस्या:–

2.1. स्वच्छन्द प्रेम
2.2. असफल प्रेम
2.3. माता–पिता एवं संतान की समस्या
2.4. परदेश प्रेम की समस्या

3. राजनैतिक समस्या:–

3.1. राजनीति दाम्पत्य जीवन में बाधक
3.2. राजनीतिक भ्रष्टाचार
3.3. राजनीतिक दाँवपेंच
3.4. राजनीतिक प्रभाव

4. आर्थिक समस्या :–

4.1. बेरोजगारी एवं रिश्वतखोरी की समस्या
4.2. अनमेल विवाह
4.3. असफल प्रेम

शिवानी जी के उपन्यासो मे उक्त वर्णित समस्याऐ जो कि आज के परिवेश मे भी उतनी ही प्रासंगिक है उपन्यास 'मायापुरी' मे संयुक्त परिवार के टूटने का चित्रण मिलता है।

'कृष्णकली' उपन्यास में रजनीकांत की पत्नी के स्वर्गवास होने पर

रजनीकांत द्वारा उसके नाम का स्कूल बनाने पर घर की वृद्ध दासी कहती है – जब तक रही उसका मुहँ तक न देखा। क्या दोष था उस बच्ची का सिर्फ रूप ही तो नहीं था। अहा! कैसी लक्ष्मी थी कितना दहेजलायी थी। उसकी बदौलत इस कोठी में राज कर रहे है। सब भूल गये। इस तरह शिवानी ने दहेज एवं सौन्दर्य की समस्या का जिक्र किया है।

'कृष्णकली' के मातापिता कुष्ठरोगी होने के कारण वे सामाजिक रूप से तिरस्कृत है। एवं कली का लालन पालन एक वेश्या करती है। जिस वजह से उसका प्रेमी प्रवीर समाज से टकराकर 'कली' को स्वीकार नहीं कर पाता जिससे टूट कर कली आत्महत्या कर लेती है।

'श्मशान चंपा' मे चंपा डॉक्टर हैं सभी तरह से योग्य होने के बाद भी बहन के अर्न्तजातीय विवाह के कारण उसकी सगाई टूट जाती है। आज भी हमारे समाज में अर्न्तजातीय विवाह स्वीकार्य नहीं है।

'चल खुसरो घर आपनेय– शिक्षित युवा नारी कुमुद के कर्त्ताव्य प्रेम और सामाजिक बंधनों के कारण उत्पन्न अंतर्द्वन्द की मार्मिक गाथा प्रस्तुत करता है।

'कैंजा' नंदी तिवारी एवं सुरेश भट्ट की एक तरफा असफल प्रेम का प्रस्तुतीकरण है। ज्योतिषी पिता द्वारा बेटी का विवाह न होने से सुरेश अपना मानसिक संतुलन खो देता है। एवं पगली कमला के बलत्कार से उत्पन्न पुत्र का लालन पालन नंदी तिवारी द्वारा करना। बहुत सी सामाजिक समस्याओ का वर्णन किया है।

वेश्याओं के जीवन के प्रति आधुनिक नारी का आक्रोश व्यक्त करते हुए लेखिका 'रथ्या' मेंकहती है कि –

'कब खुलेगे पुरुष वेश्याओ के बाजार' वेश्या भी नारी है उसके मन मे भी प्रेम व त्याग की भावना होती है वह भी सफल ग्रहणी बन सकती है। 'श्मशान चंपा' उपन्यास में त्यागमयी वेश्या का चित्रण किया गया है।

'कालिन्दी' उपन्यास मे अन्नपूर्णा के बाल विवाह का जिक्र है। एवं विवाहोपरांत उस पर दहेज के लिए मानसिक एवं शारीरिक प्रताड़ना का मार्मिक चित्रण है। पिता द्वारा पुत्री को पुन: ससुराल न भेजने के कारण आजीवन पतिविहीनजीवन भोगती है। दहेज के कारण कालिंदी का विवाह भी होते होते रूक जाता है।

'रतिविलाप' लघु उपन्यास में हीरावती का विवाह बचपन मे अधेड़ के साथ करा दिया जाता है। 'पाथेय', 'पुष्पहार', पिटी गोट आदि कहानियों में भी कम आयु में विवाह कराये जाने के उदारण है।'गैंडा' लघु उपन्यास में राज अपने बदसूरत पति के कारण कुण्ठित जीवन जी रही है। और सुपर्णा के पति को अपने रुपजाल में फँसा कर दोनो का दाम्पत्य जीवन बर्बाद कर लेती है। 'पूतोवाली' उपन्यास मे समकालीन परिस्थतियो मे समाज में वृद्ध माता–पिता के प्रति संतान का असंवेदन, गैर जिम्मेदराना, व्यवहार को इंगित किया है। 'तीसरा बेटा' में आज के टूटते परिवार नये रिश्ते के बदलाव का चित्रण एवं अनाथ बच्चों की समस्या को ध्यान में रखा है।

तर्पण (लघु उपन्यास) नायिका पुष्पा पंत जिससे 13 वर्ष की उम्र में बलत्कार होता है। बलत्कारी भोला नाथ नेता बनकर गाँव मे सम्मान पाता है। तब नायिका उसकी हत्याकर खून से माता पिता को तर्पण करती है।

अर्थ कई समस्याओं का कारणभूत तत्वहै।इसके तले मनुष्य परिवार समाज ही नहीं धर्म और राजनीति भी इसके अर्न्तगत ही पलते, फूलते और संचालित होते हैं। लेखिका को अर्थ के कारण समाज मे व्याप्त परिवर्तन, सामाजिक ताना बाना एवं जन्म लेती समस्याऐ प्रभावित करती है।

शिवानी ने अपने साहित्य मे यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। उन्होने समाज की वास्तविकताओ को बिना किसी लाग लपेट के उजागर किया है। उन्होने समाज में व्याप्त ठगी बाबाओ द्वारा किये गये जादूटोने, पंडो द्वारा किये गये धार्मिक भ्रष्टाचार, दहेज एवं अनमेल विवाह पंडो का यथार्थ रूपण चित्रण किया है। 'मायापुरी' में प्रचुर वैभव – सम्पत्ती प्रभावित होकर अपनी स्वछन्दमना अनाकर्षक पुत्री सविता के लिए सतीश जैसा सुयोग्यवर जुटा लेते है।

लेखिका के शब्दो में – अपने वैभव से सबसे वाँछनीय नररत्न का हृदय जो उसके चरणो मे डाल दिया है।

आर्थिक विपन्नता समाज को अव्यवस्थित कर देती है। गरीबी के कारण 'चौदह फेरे' उपन्यास की मल्लिका अपनी बसी बसाई गृहस्थी उजाड़ देती है। मात्र पैसे के लिए उसका नैतिक पतन हो जाता। इस आर्थिक विपन्नता के कारण कई सामाजिक समस्याओ का जन्म होता है।

साहित्य संसार में उपन्यास साहित्य की वह विधा है जिसमे सारा समाज दर्पण के सामने पड़ने वाली परछाई के समान दृष्टिगोचर होता है।

भारतीय समाज में जहाँ एक तरफ नारी को 'यत्र नारी पूज्यन्ते, रमंते तत्र देवता' की भावना के तहत देवी तुल्य मानकर पूज्यनीय माना गया है। वही इसका दूसरा पहलू यह है कि नारी को दूसरे पायदान पर रखकर उसका शोषण किया गया है। विधव नारी, बलात्कार पीड़िता, कुंठाग्रस्तता नारी का कई रूप आज के परिवेश में चारो ओर दिखाई देता है। शिवानी ने समाज में नारियो का समस्त विडम्बनाओ का यथार्थ वर्णन किया है। भारतीय समाज में नारी का विधवा जीवन एक अभिशाप है।वर्तमान युग की बात छोड़ दे तो पहले विधवा को पुनर्विवाह की स्वीकृति नहीं थी। उक्त नारी अभिशप्तता का वर्णन शिवानी जी ने बहुत ही मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष – वर्तमान परिवेश मे संयुक्त परिवारो का विघटन हमारे सामाजिक ढाँचे को चरमरा रहा है। एकल परिवार का चलन बढ़ने से माता–पिता एवं दम्पत्ति एवं बच्चे रोज ही एक नई समस्या से जूझ रहे है।बढ़ते वृद्धाश्रमो की संख्या जहाँ हमारा उनके प्रति असंवेदनशीलता का प्रदर्शित करता है। वही युवा पीढ़ी, वृद्धो की देखभाल के आभाव मे दिग्भ्रमित होकर सर्वनाश की ओर जा रही है।

युवा वर्ग में बढ़ती स्वतंत्रता, स्वच्छन्दता प्रेम विवाह, अनैतिक संबंध, दाम्पत्य जीवन में टूटन के रूप मे सामने आती है। स्वच्छन्द प्रेम, असफल प्रेम, अनैतिक संबंध से उत्पन्न संतान 'अवैधसंतान' जिसे अभी भी हमारा आधुनिक समाज अभी भी स्वीकार नहीं कर पाता है, एवं उनका लालन पालन आज समस्या ही हैं, चाहे वह ग्रामीण परिवेश हो या शहरी परिवेश।

राजनैतिक महत्कांक्षाओं की पूर्तिहेतु युवक–युवतिया अपने दामपत्य जीवन एवं प्रेम–संबंधो की बलि देने में तनिक भी विचार नहीं करते हैं। जिससे समाज में असंतोष, टूटन व्याप्त है परिवार अर्न्तकलह से गुजर रहे है, परिणाम स्वरुप 'तलाक' जैसा घाव परिवार को एवं समाज को मिला है। जो कि समय समय पर टीस उठती है। एवं आने वाली पीढ़ियो को दुखद परिणाम ही देती है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति एवं विकासशील समाज मे कुष्ठ आज भी छूत का रोग माना जाता है एवं व्यक्ति सामाजिक बहिष्कार का शिकार होता है।

बलत्कार आज के युग का सबसे अधिक अमानवीय कृत्य है, जिससे पूरा नारी समाज शर्मसार है। आज भी छोटी बच्चियाँ इस सामाजिक विद्रूपता

की शिकार होती है। एवं पूरे जीवन भर इस दंश को भोगती है। वेश्यावृत्ति समाज के लिए अभी भी एक अभिशाप है। मेरा मानना है कि वेश्यावृत्ति बलत्कार, अवैध संतान समाज का कोढ़ है, जिसे जड़ से उखाड़ फेकना अत्यंत आवश्यक है।

वृद्ध आश्रमो की बढ़ती संख्या मातापिता के प्रति संतानो का असंवेदनशील होना ही है। जो आने वाली पीढ़ियो को गर्त में ले जाने का कार्य ही करेगा एवं संस्कारहीन, संवेदनहीन, असहिष्णु, समाज का निर्माण करेगा।

लेखिका ने प्राचीन परिपाटी को तोड़कर विधवाविवाह की पैरवी की हैं साथ ही उसे स्वावलम्बी होकर समाज में संघर्ष रत रहने का साहस भी प्रदान किया है। एवं आत्मसम्मान से जीवन जीने हेतु प्रेरित किया है।

अत: कहा जा सकता है कि अपनी साहित्यक यात्रा के दौरान शिवानी जी द्वारा उठायीं गयी सामाजिक समस्याये वर्तमान परिवेश में आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. 'रतिविलाप'- शिवानी - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली -पृष्ठ 18,19
2. किशनुली-शिवानी - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली -पृष्ठ56
3. मायापुरी - शिवानी राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली- पृष्ठ 45
4. अतिथि- शिवानी राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली- पृष्ठ 86
5. चौदहफेरे - शिवानी राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - पृष्ठ 42
6. रथ्या (कस्तुरी मृग) -शिवानी राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - पृष्ठ 125
7. कैंजा- शिवानी - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - पृष्ठ 24, 78
8. कालिन्दी-शिवानी-राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली -पृष्ठ 18
9. अतिथि-शिवानी -राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली -पृष्ठ86
10. तर्पण- शिवानी -राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली -पृष्ठ78
11. कैंजा- शिवानी- राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली -पृष्ठ50
12. करिए छिमा (सम्पूर्ण कहानियाँ) राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली - पृष्ठ138
13. मणिमाला की हँसी (सम्पूर्ण कहानियाँ)राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली- पृष्ठ69
14. शिवानी सम्पूर्ण कहाँनियाँ-भाग-1 राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. शिवानी सम्पूर्ण कहाँनियाँ-भाग-2 राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

****